इसके अभ्यास से अवश्य ही पर कर्ता-भोक्ता की खोटी बुद्धि का अभाव होकर जीवों को धर्म की प्राप्ति का अवकाश है। ऐसी भावना से ओतप्रोत होकर हम आत्मार्थियों से निवेदन करते हैं कि वे इस पुस्तक का अभ्यास कर अपने हितमार्ग पर आरुढ़ होवें।

विनीत

मुमुक्षुमंडल

श्री दिगम्बर जैन मदिर

सरनीमल हाऊस, देहरादून

मुख्य विषय

पाठ	प्रकरण	पृष्ठ
	मंगलाचरण	१
१	भेद विज्ञान	३
२	विश्व	१३
३	द्रव्य	४६
४	गुण	१००
५	पर्याय	१२२
	तथा सम्यग्दर्शन और मोक्ष के लिए आठ बोलों का वर्णन	१८३

—•—